

खैर विवर्तनिकी

खैर विवर्तनिकी के आप क्या समझते हैं? इसकी माझीचनात्मक व्याख्या करें।

- (A) परिचय
- (B) मान्यताएँ
- (C) खैर की जाति और विवर्तनिकी किरणें
- (D) भूजैतिक समझाओं का समझान

(A) परिचय:-

खैर विवर्तनिकी एक ऐसा सिद्धांत है जिसमें भू-भौतिकी के सिद्धांत और के क्रान्तिकारी परिवर्तन का दिया। इस सिद्धांत की मान्यता भू-संतुलन, पर्वत निर्माण, ज्वालामुखी और भूकंप के परंपरागत विचारों की महत्वपूर्ण कर दिया तथा एक ऐसे विचार को प्रस्तुत किया जो एक ही प्रक्रिया द्वारा ज्वालामुखी की उत्पत्ति, पर्वत निर्माण, भूकंप आदि को स्पष्ट करता है। यह सिद्धांत एक व्यक्ति द्वारा न बनेर कई भू-जैव शास्त्रियों के अनुसंधान का परिणाम है। इस दृष्टि से प्रथम कार्य "हेरिष मबेदय" द्वारा किया गया। लेकिन खैर का एक महत्वपूर्ण कार्य मॉर्गन (1967) ने किया गया। इसके माझाका विस्तार, फर्कब मैकजी ने भी इस सिद्धांत की उद्दिष्ट की।

(B) मान्यताएँ :-

यह सिद्धांत तीन महत्वपूर्ण मान्यताओं

पर आधारित है -

(i) यह सिद्धांत श-परतल को दो भागों में बांटता है, प्रथम भाग क्षेत्र है जो स्थिर संवेहन तंत्रों के प्रभाव से मुक्त है। यह श-संचयन की क्रियाएँ नहीं के बराबर होती हैं। इसका क्षेत्र वह है जहाँ पर क-संचयन की क्रियाएँ होती हैं इसे विकर्तविकी क्षेत्र कहा जाता है। यह क्षेत्र को सीमा एवं सीमांत का क्षेत्र है।

(ii) इसी मान्यता यह है कि सभी क्षेत्र दुर्बल क्षेत्र पर स्थित है। दुर्बल क्षेत्र की अवस्था चिपचिपी है और यह अधिक द्रव्य की चट्टानों से बना है। परिणाम स्वरूप सभी क्षेत्रों इसके ऊपर तैरती हैं अथवा प्रवाहित होती हैं।

(iii) तीसरी मान्यता यह है कि सभी क्षेत्र एक-दूसरे के परिपेक्ष्य में प्रवाहित होती हैं पुनः यह सभी क्षेत्र पृथ्वी के अक्ष का अनुसरण करते हुए प्रवाहित होती हैं। संपूर्ण श-परतल में अनेक क्षेत्र पाये जाते हैं। अमेरिकी विज्ञान आकाशवाणी के अनुसार संपूर्ण श-परतल में सात बड़े एवं छः छोटे क्षेत्र हैं जो निम्नवत् हैं -

- सात बड़े
1. प्रशांत क्षेत्र
 2. आल्पीय क्षेत्र
 3. उत्तरी अमेरिका क्षेत्र
 4. दक्षिणी अमेरिका क्षेत्र
 5. अफ्रीका क्षेत्र
 6. यूरोपियन क्षेत्र
 7. अंटार्कटिक क्षेत्र

- छोटे
1. आग्नेयविमान
 2. कैरेबियन
 3. फिलीपाइन
 4. नाउछा (चीनी)
 5. फाओस
 6. इलमोसिमा

इस क्षेत्र का औसत गहराई 100km है। अधिकतम उंचाई 100km है एवं न्यूनतम 5km होती है। ये धनी क्षेत्र एक दूसरे से इस प्रकार बड़े हुए क्षेत्र हैं कि उनके बिना ज्व-गर्भक अध्ययन के उनकी सीमाओं का पता लगाना असंभव है क्योंकि बिना प्रकार उपाय लक्ष्य दिखने वाली मांगी के नीचे स्पष्ट सीमाएँ होती हैं। उसी प्रकार स्पष्ट दिखने वाली क्षेत्र की सीमाएँ भी होती हैं।

① क्षेत्रों की गति और विवर्तनिकी किलैं

क्षेत्रों की गति के विषय में अनेक कारण दिये जाते हैं। सर्वप्रमुख कारण यह है कि उपर के हल्के चरानों से बने क्षेत्र नीचे के प्लास्टिक भागों में स्थित दुर्बल मंडल पर प्रसारित होते हैं। इसी मान्यता यह है कि महासागरीय सबह से प्रसार के कारण क्षेत्रों में रिकम्पैक्शन आता है। तीसरी मान्यता यह दिया जाता है कि प्रत्यावर्तित क्षेत्र करीब 45° का ढाल बनाता है और यह ढाल क्षेत्रों के प्रवाह (अवलम्बित) के कारण के लिए प्राप्त है। लेकिन सर्वाधिक संतोषजनक व्याख्या "आर्थर बेल्स" (1928) के संकलन तरंग सिद्धांत से होती है। 'बेल्स' के अनुसार ध्रुवी के भौतिक भाग में रेडियो सक्रिय तत्वों के टूटने और सामान्य ताप में हटने के कारण (प्रति 300 फीट पर $1^\circ F$) ताप संग्रह होता है और संग्रहित ताप उर्जा संकलन तरंग की जन्म होती है। ये संकलन तरंग इतने अधिकशाही

थी है कि जैसे ही खींचते हैं उसे विरहित कर देते हैं मोड़ या दबे हैं और उंचे तथा गहरे सु-परबीज खंडों का निर्माण करते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि संवहन तरंगों जैसे में जाति जाते हैं और ये गतिशील क्षेत्र अपनी सीमाओं पर एक-दूसरे से रूढ़ जाते हैं। सीमा के विशेषताओं के कारण पर क्षेत्र के जाति को तीन कार्यों के कार्य कहा है -

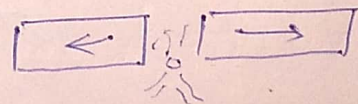
(i) निर्माण कार्य जाति

(ii) विनाशकारी जाति

(iii) संरक्षी जाति

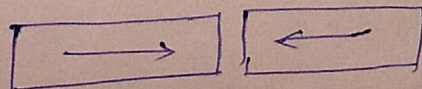
(i) निर्माणकारी सीमांत :- ये तीनों सीमांत की अपनी-2

विशेषताएँ हैं। निर्माणकारी सीमांत जहाँ संवहन तरंग के कारण जैसे का विखण्डन होता है। विखण्डन के कारण स्वाभाविक क्रिया होती है - चूने स्वाभाविक क्रिया से सु-परबीज में निर्माण का कार्य होता है इसलिए इसे निर्माण कार्य कहा जाता है।



(ii) विनाशकारी क्षेत्र :-

जहाँ पर ही क्षेत्र आपस में टकराते हैं इससे रुढ़मतः अधिक घनत्व वाले क्षेत्र नीचे चले जाते हैं और हल्के घनत्व वाले क्षेत्र ऊपर चले जाते हैं - चूने नीचे जाने वाले को भाँगे का भाँगा भाँप के प्रकार के कारण विखंडन होता है जिसका विनाश भी जाता है इसलिए इसे विनाशकारी क्षेत्र या सीमांत कहा जाता है।



विनाशकारी क्षेत्र

(ii) संरक्षित स्थिति :-

संरक्षित स्थिति की इति है यह महत्वपूर्ण गी है यहाँ पर क्षेत्र आपस में रगड़ खाते हैं जिससे डॉल, डेरे वंग का निर्माण होता है जो रगड़ खाते के फलस्वरूप अंत क्षेत्र की शक्ति धरे रहती है।

(iii) भूगर्भीय लक्षणों का उदाहरण

1. यह पर्वत निर्माण व्यापक संशोधनक करता है। इससे न केवल माउंटन पर्वत, ब्लॉक पर्वत तथा स्वाच्छाली की भी निर्माण प्रक्रिया का व्यापक अवलोकन इस सिद्धांत के पूर्व यह मान्यता थी कि माउंटन पर्वत का निर्माण परब्रह्म चतुर्णों में कोई पड़ने से होता है किन्तु इस सिद्धांत ने स्पष्ट किया कि आंतरिक तरंग इतने अधिकशाली होते हैं कि वे क्षेत्रों में कोई भी होते हैं।

(iv) आधोचक्र :-

इस सिद्धांत की भी आधोचक्र वर्णनशास्त्री काम की गई थी इस प्रकार है -

(i) क्या आंतरिक तरंग विनाशक जैसे विशाल पर्वत का निर्माण कर सकती है।

(ii) इस सिद्धांत की इसरी लक्षण है क्षेत्रों के निचले सीमा और सीमा के बीच कोई लक्षणपता गली पायी जाती है।